सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय,अल्मोड़ा (उत्तराखंड)

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा द्वारा आयोजित किए गए कार्यक्रमों की रिपोर्ट

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस (05 जून) के अवसर पर जनमानस को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील रहने, कोरोनाकाल में पर्यावरण की महत्ता को समझाने, जनमानस को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करने आदि को लेकर वेबिनार/गोष्ठियां संचालित की।

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोडा के कूर्मांचल एवं एन0 बी0 छात्रावास में विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर पौधारोपण एवं एक गोष्ठी का आयोजनः

विश्व पर्यावरण दिवस पर सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के कूर्मांचल एवं एन0 बी0 छात्रावास में पर्यावरण संरक्षण को लेकर एक गोष्ठी आयोजित हुई और मेडिसिनल प्लांट्स का रोपण किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के माननीय कुलपति प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ0 बिपिन चंद्र जोशी, परिसर निदेशक प्रो0 जगत सिंह बिष्ट, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 जया उप्रेती, 'क्लीन कैंपस–ग्रीन कैंपस' अभियान के संयोजक डॉ0 नवीन भट्ट आदि ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

कूर्मांचल छात्रावास के छात्रावास अधीक्षक डॉ0 देवेंद्र धामी और एन0 बी0 छात्रावास के अधीक्षक डॉ0 नवीन भट्ट के संयोजन में वृक्षारोपण की विधिवत् शुरुआत की गई और कार्यक्रम के अतिथियों ने छात्रावास के आस–पास फलदार पौधों का रोपण किया गया।

कार्यक्रम संयोजक डॉ0 नवीन भट्ट ने कार्यक्रम की विस्तार से रूपरेखा प्रस्तुत की।

इस अवसर पर **सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के कुलसचिव डॉ0 बिपिन चंद्र जोशी** ने मेडिसिनल प्लांट्स को लगाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के माननीय कुलपति जी ने **'मीत पीपल अभियान'** शुरु किया है। जो अब पूरे राज्य में फैल गया है। जनमानस भी प्रेरित होकर अब इस अभियान से जुड़ रहे हैं। इस अभियान को हम बहुत बड़े स्तर पर ले जाने का प्रयास करेंगे। उन्होंने नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड, नई दिल्ली के द्वारा औषधीय पौधों के संवर्धन के लिए किए जा रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि इस प्रोजेक्ट के तहत हम घरों में मेडिसिनल प्लांट लगाने के लिए लोगों को जोड़ रहे हैं। हम 20 मेडिसिनल प्लांट्स

को अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ जिले में लगाने के लिए प्रोजैक्ट पर कार्य कर रहे हैं। ये औषधीय पौंधे हमारे जीवन से जुड़े हुए हैं।

परिसर की अधिष्ठाता छात्र कल्याण **प्रो0 जया उप्रेती** ने कहा कि पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करते हुए हमें वृक्षों को लगाना है और उन्हें बचाना भी है। उन्होंने बताया कि उच्च हिमालयी क्षेत्रों में पर्यटक हमारी जैव विविधता के साथ नुकसान पहुंचा देते हैं, अपने द्वारा प्रयोग की गई हुई प्लास्टिक सामग्री को वहीं छोड़ आते हैं, ऐसे में हमें उन पयर्टक क्षेत्रों में पर्यावरण के संरक्षण के लिए जागरुक करने की आवश्यकता है। हमें वृक्षा रोपण कर इस पृथ्वी की रौनक को बरकरार रखना होगा। उन्होंने कहा कि हमें अपने विद्यार्थियों के माध्यम से स्थान चिंहित कर वृक्षारोपण करने की आवश्यकता है। हम स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों को आवश्यक रूप से पेड़ लगाने के लिए प्रेरित कर वृक्षारोपण अभियान से जुड़ सकते हैं।

वृक्षारोपण करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति जी एवं अन्य अधिकारी

परिसर के **निदेशक एवं निदेशक, शोध एवं प्रसार निदेशालय प्रो0 जगत सिंह बिष्ट** ने कहा कि पर्यावरण एक संवेदनशील विषय है। हम इस समय बहुत विकराल विभीषिका 'कोरोना' से गुजर रहे हैं। जिससे हम सभी को सचेत रहने की जरुरत है। हमें बच्चों को भी अपने पर्यावरण से जोड़कर उसके महत्व से रूबरु करा सकते हैं। पर्यावरण के प्रति उनकी रुचि को बढ़ाना होगा। जिस युग में हम हैं, वहां तक आने में हमने बहुत लंबा सफर तय किया है। हम प्रकृति के बीच पले–बढ़े हैं, इसलिए उसके महत्व को समझकर, उसके संरक्षण के लिए आगे आने की आवश्यकता है। हमें प्राकृतिक संसाधनों का नियोजित तरीके से प्रयोग करना होगा। नगरीय–महानगरीय संस्कृति से हटकर हम हमेशा पर्यावरण के बीच रहें हैं। प्रकृति के मध्य ही हम बसे हुए हैं लेकिन आज उस प्रकृति के साथ हमने अपनी गतिविधियों से नुकसान पहुंचाया है। पर्यावरण को लेकर उन्होंने कहा कि हमें पर्यावरण को समझना है, उसका संवर्धन, उसका संरक्षण करना है। विकास के दौर में हमें प्रकृति की चिंता करनी चाहिए, जो अब हम नहीं कर पा रहे हैं। हमें पेड़ ही नहीं लगाना है, बल्कि उसे बचाना भी है। पर्यावरण पर चिंतन किया जाना आवश्यक है। हमें प्रत्येक वर्ष वनारोपण करने के लिए आगे आना चाहिए और जनमानस को भी इस कार्य हेतु प्रोत्साहित करना होगा।

मुख्य अतिथि के रूप में **सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी** ने कहा कि हमें पर्यावरण को बचाने के लिए पूर्ण मनोयोग से धरातल पर कार्य करना होगा। हमें इस पृथ्वी को हरा–भरा बनाने के लिए जनमानस का सहयोग लेने की आवश्यकता है। हम उनके सहयोग से ही पर्यावरण को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य कर सकते हैं। हमें ग्रामीणों का सहयोग लेकर वृक्षारोपण करना होगा, क्योंकि ग्रामीणों का अपनी प्रकृति के साथ काफी लगाव होता है। वह अपने आस–पास के पौधों, वृक्षों, जानवरों आदि से काफी लगाव रखते हैं। आज उन्हीं की वजह से हमारी जैव विविधता बची भी है। हमें उनके सहयोग से प्रकृति को पुनः हरा–भरा बनाना होगा। उन्होंने कहा कि पर्यावरण का निरंतर क्षरण न हो, इसके लिए हमें सचेत रहने की आवश्कयता है। हम आयुर्वेद, योग आदि परम्परागत ज्ञान को बचाने के लिए संकल्प लें और आगे आएं। प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर विकास करने की जरुरत है। अन्यथा हमको बहुत बड़ी क्षति भविष्य में उठानी पड़ सकती है। प्रकृति को बचाते हुए हमें जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा ने कोविड–19 के समय जनमानस को जागरुक करने में और पर्यावरण के संरक्षण के लिए बेहतर कार्य किया है। हमारे विश्वविद्यालय के योग विज्ञान,

पत्रकारिता एवं जनसंचार मनोविज्ञान, राष्ट्रीय सेवा योजना, कुमाउनी भाषा, शिक्षा शास्त्र आदि विभागों ने बहुत सराहनीय योगदान दिया है। आज भी ये विभाग जनमानस को जागरुक कर रहे हैं। जनता को हमारे विश्वविद्यालय के अभियान/कार्यों से जोड़ रहे हैं, यह हमारे लिए सफलता की बात है। आज हमारे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मी जनमानस को जागृत करने में लगे हुए हैं, यह हमारे विश्वविद्यालय के लिए गौरव और सफलता की बात है। उन्होंने कहा की पर्यावरण में हो रहे असंतुलन पर आज विश्व स्तर पर चिंतन किया जा रहा है। विगत पांच–सात दशकों से इस पर गंभीर चिंतन हो रहा है, किंतु आज इस महामारी के समय यह चिंता और गहरी हुई है।

हमें कोविड–19 से बचने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का ही सहारा लेना पड़ रहा है। विगत दशकों से हमने प्रकृति का काफी दोहन किया है। अब हम सभी को पर्यावरण के लिए कार्य करने का समय आया है। आज तक प्रकृति से हमने लिया है, अब उसे देने का समय आया है। पर्यावरण को बचाने के लिए हम अपने आस–पास किचन गार्डन विकसित करें और इस धरती माता के वैभव को स्थापित करने का काम करें। जलवायु परिवर्तन पर बात रखते हुए उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन हो रहा है। हमारे वैज्ञानिक समय–समय पर जलवायु परिवर्तन के संबंध में सूचनाएं, चेतावनियां दे रहे हैं। हमें उन पर गौर करना होगा। हमें जलवायु परिवर्तन को गंभीरता से लेना होगा। हमें जनमानस की सहभागिता से पर्यावरण को संतुलित बनाने के लिए जमीन से शुरुआत करनी होगी। हमें प्रकृति के साथ हो रहे अनाचार को रोकना होगा। उन्होंने कहा कि जब हम पृथ्वी को हरा–भरा करेंगे तो हमें ऑक्सीजन प्राप्त होगी, हमें जल मिलेगा, हमें प्राणवायु मिलेगी। हमें विद्यार्थियों के साथ मिलकर इसके लिए कार्य करने होंगे। हमने सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा ने क्लीन कैंपस–ग्रीन कैंपस, 'मीत पीपल अभियान' जैसे अभियानों को जनमानस के सहयोग से शुरु किया है। उन्होंने सभी से अपील करते हुए कहा कि आइए पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन के लिए शपथ लें।

औषधीय पौधों का रोपण करते हुए विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी

आभार जताते हुए **'ग्रीन कैंपस–क्लीन कैंपस' अभियान** के **संयोजक** और कार्यक्रम के संयोजक **डॉ0 नवीन भट्ट** ने कहा कि हम सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा में ग्रीन 'कैंपस–क्लीन कैंपस' अभियान के तहत वृक्षारोपण करते रहेंगे और पृथ्वी को हरा–भरा बनाने के लिए सहयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि माननीय कुलपति जी के निर्देशन में 'क्लीन कैंपस–ग्रीन कैंपस' अभियान को जनमानस के बीच ले जाकर, सभी को इस मुहिम से जोड़ेंगे। इस अवसर पर संचालन शोधार्थी रजनीश जोशी ने किया।

कार्यक्रम में डॉ0 नंदन सिंह बिष्ट (रसायन विज्ञान), नमामि गंगे की विश्वविद्यालय संयोजक डॉ0 ममता असवाल (शिक्षा संकाय), डॉ0 भाष्कर चौधरी (शिक्षा संकाय), डॉ0 मुकेश सामंत (जंतु विज्ञान विभाग), कूर्मांचल छात्रावास के अधीक्षक डॉ0 देवेद्र धामी (रसायन विज्ञान विभाग), डॉ0 ललित चंद्र जोशी (पत्रकारिता एवं जनसंचार), विनीत कांडपाल, श्री गिरीश अधिकारी, चंदन लटवाल, ललित पोखरिया, गोविंद मेर, मोहन सिंह ढैला, दिनेश पटेल, गौरव उप्रेती, विजयानंद जोशी अतुल कुमार यादव सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा 'सॉल्विंग एनवायरोनमेंटल प्रॉबलम्स ऑन कम्युनिटी इनवॉल्वमेंट, इन हिमालयन रीजन' विषय पर एक–दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन:

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा 'सॉल्विंग एनवायरोनमेंटल प्रॉबलम्स ऑन कम्युनिटी इनवॉल्वमेंट, इन हिमालयन रीजन' विषय पर एक–दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित हुआ। **विश्व प्रर्यावरण दिवस** के मौके पर विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के **विभागाध्यक्ष डॉ0 बलवंत कुमार** के संयोजन में एक–दिवसीय सेमिनार का आयोजन हुआ।

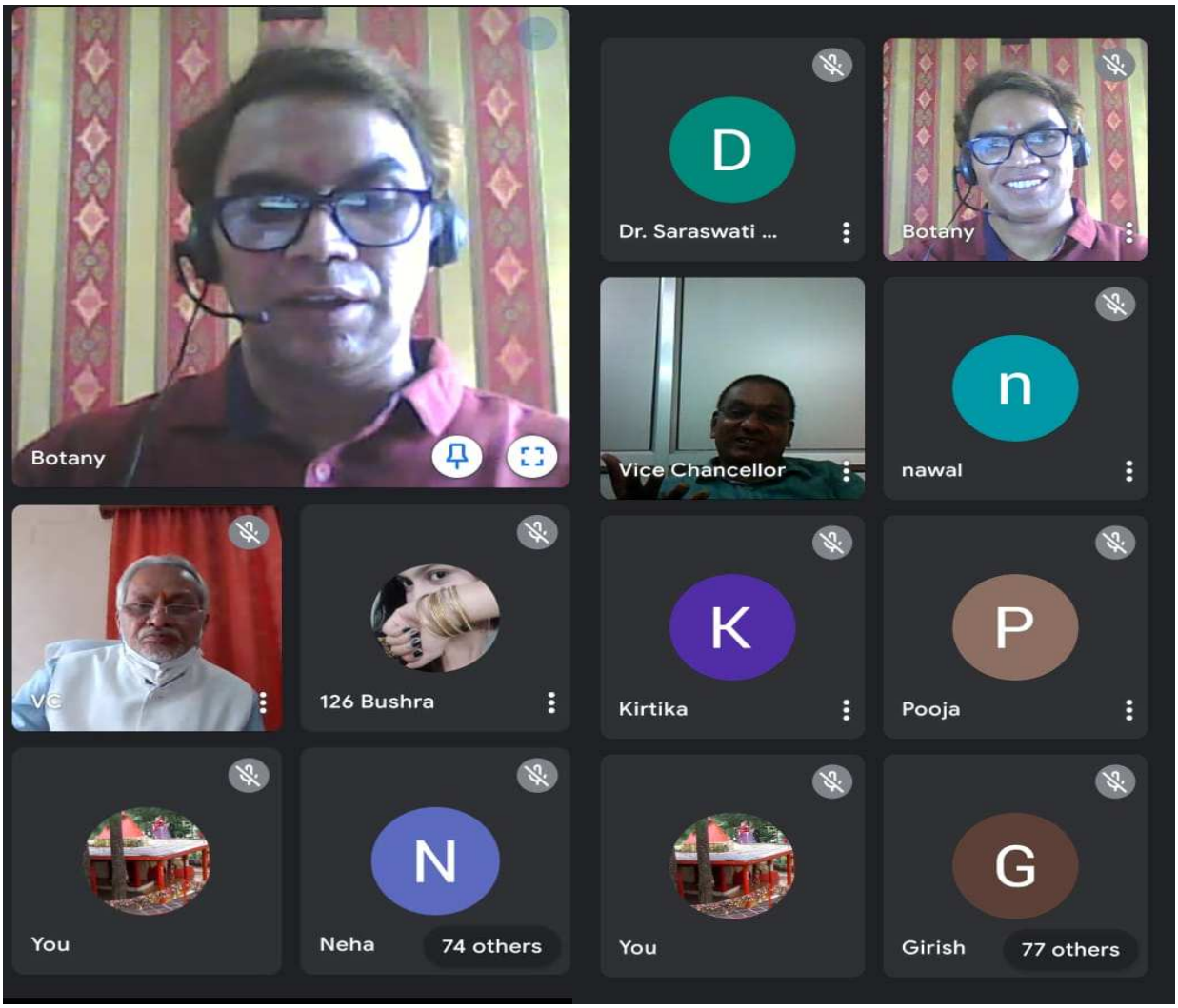

इस अवसर पर **मुख्य अतिथि के** रूप में **प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी**, कुलपति, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि के तौर पर **प्रो0 ओ0 पी0 एस0 नेगी**, कुलपति उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, बीज वक्ता के तौर पर **प्रो0के0 एन0 दुबे** (एफएनएएससी और बी0 एच0 यू0 के वनस्पति विज्ञान विभााध्यक्ष), **प्रो0 डी0 के0 उप्रेती** (एफएनए, एफएनएएस, एफइएस, एफआईएसईबी, सीएसआईआर–एमेरिट्स साइंटिस्ट, सीएसआईआर–एनबीआरआई, लखनऊ) थे। **रिसोर्स पर्सन** के रूप में **प्रो0 एस0 डी0 तिवारी** (विभागाध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग, राजकीय महिला कॉलेज, हल्द्वानी) एवं **वैज्ञानिक डॉ0 जी0 सी0 एस0 नेगी** (गोविंद बल्लभ पंत, हिमालयी पर्यावरणीय संस्थान, कोसी कटारमल के सेंटरफॉर

सोशियो–इकोनॉमिक डेवलेपमेंट के अध्यक्ष), **कार्यक्रम संयोजक डॉ0 बलवंत कुमार** (विभागाध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग), **डॉ0 धनी आर्या** ने कार्यक्रम का वर्चुअल रूप से उद्घाटन कर शुरुआत की।

वेबिनार के **मुख्य अतिथि, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र सिंह भंडारी** ने अपने उद्बोधन में वनस्पति विज्ञान विभाग के डॉ0 बलवंत कुमार एवं उनकी पूरी टीम को बधाई दी। उन्होंने कहा कि हम प्रकृति की सुंदरता को खराब कर रहे हैं। जो चिंता की बात है। विश्व में पर्यावरण चिंतन एक गंभीर विषय बनकर उभरा है। विगत वर्षों में जिस तरीके से प्रकृति को नुकसान पहुंचा है। उससे जीवन में संघर्ष उत्पन्न हुआ है। पर्यावरण पर काम करने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भी जैव विविधता, पर्यावरण चिंतन, ग्लोबल वॉर्मिंग विषय पर संवेदनशीलता के साथ कार्य कर रही हैं। उन्होंने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या भविष्य के लिए चिंता उत्पन्न कर रही हैं। उन्होंने वेदों की उक्तियों के माध्यम से पर्यावरण में संतुलन बनाने, उसकी निरंतरता को बनाए रखने की अपील की। जिस गति से प्रकृति का क्षरण हो रहा है। इसके गंभीर परिणाम आएंगे। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ से हमें भविष्य में बहुत गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। इसलिए हमें सचेत रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर भी पर्यावरण के क्षरण पर चिंता व्यक्त हुई है। प्रकृति का सीधा–सीधा संदेश हमें कोरोनकाल में देखने को मिला है।

यदि हमने प्रकृति के साथ अन्याय किया तो वो सही नहीं होगा। ऐसी स्थितियां हमारे सामने हर–दिन आने लगेंगी। उन्होंने धरती माता को बचाने के लिए जनमानस का आह्वान किया। अपने उद्बोधन में भारतीय प्राचीन साहित्य, शास्त्रों में प्रकृति की बातों का भी उल्लेख किया। भारत के प्राचीन ग्रंथों में प्रकृति और मानव के बीच के संबंध को प्रकट किया है। आज हमें उस संबंध को समझने की आवश्कयता है। उन्होंने कहा कि हम समुदाय से जुड़कर ऐसे कार्य कर सकते हैं। हमें प्रकृति के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करने की आवश्यकता है। उन्होंने सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के द्वारा पर्यावरण के संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय द्वारा पर्यावरण के संरक्षण, जैव विविधता को बचाए रखने, सौर ऊर्जा का प्रयोग करने, वर्षा–जल संचयन आदि के लिए भी कार्ययोजना बनाई है। हम जनमानस के साथ मिलकर कार्य करने की योजना बना रहे हैं। पर्यावरण इकोसिस्टम के री–स्टोरेशन के लिए हमें अपना योगदान देना होगा।

रिसोर्स पर्सन के तौर पर डॉ0 एन0 के0 दुबे ने कहा कि पर्यावरण की चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पर्यावरण बहुत संवेदनशील विषय के तौर पर उभर रहा है। इस ओर हमें ध्यान आकर्षित करना होगा। उन्होंने कहा कि धरती का संतुलन बिगड़ रहा है। हमारे पूर्वज हर्बल, वनस्पतियों को जानते थे। अपने आस–पास के जानवरों की आवाज से परिचित थे, इसलिए वह इलाज भी कर लेते थे। कई ऐसी वनस्पतियों का आज भी ग्रामों में उपयोग किया जा रहा है। यह हमारा प्राचीन ज्ञान ही है लेकिन हमने उस ज्ञान को लगभग नजरअंदाज कर दिया है। अब हम इनके बारे में कम जानते हैं। आज महामारी के दौर में इन वनस्पतियों को जानने की आवश्यकता है। अब हमें उन औषधीय वनस्पतियों के बारे में जानने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यह परंपरागत ज्ञान, हमारे देश से ज्ञान बाहर को गया है। हमारे पूर्वज बायो–डायवर्सिटी को समझते और उसका प्रयोग करना जानते थे। कोरोना के दौर में हमें अपनी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए इन मेडिसिनल प्लांट की आवश्यकता पड़ी है। अब हमें इन वनस्पतियों को बचाने व संवर्धन के लिए कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि पर्यावरण परिवर्तन से हमारे जो मेडिसिनल प्लांट समाप्त हो रहे हैं। इस पर बड़े स्तर पर शोध किया जाना जरूरी है।

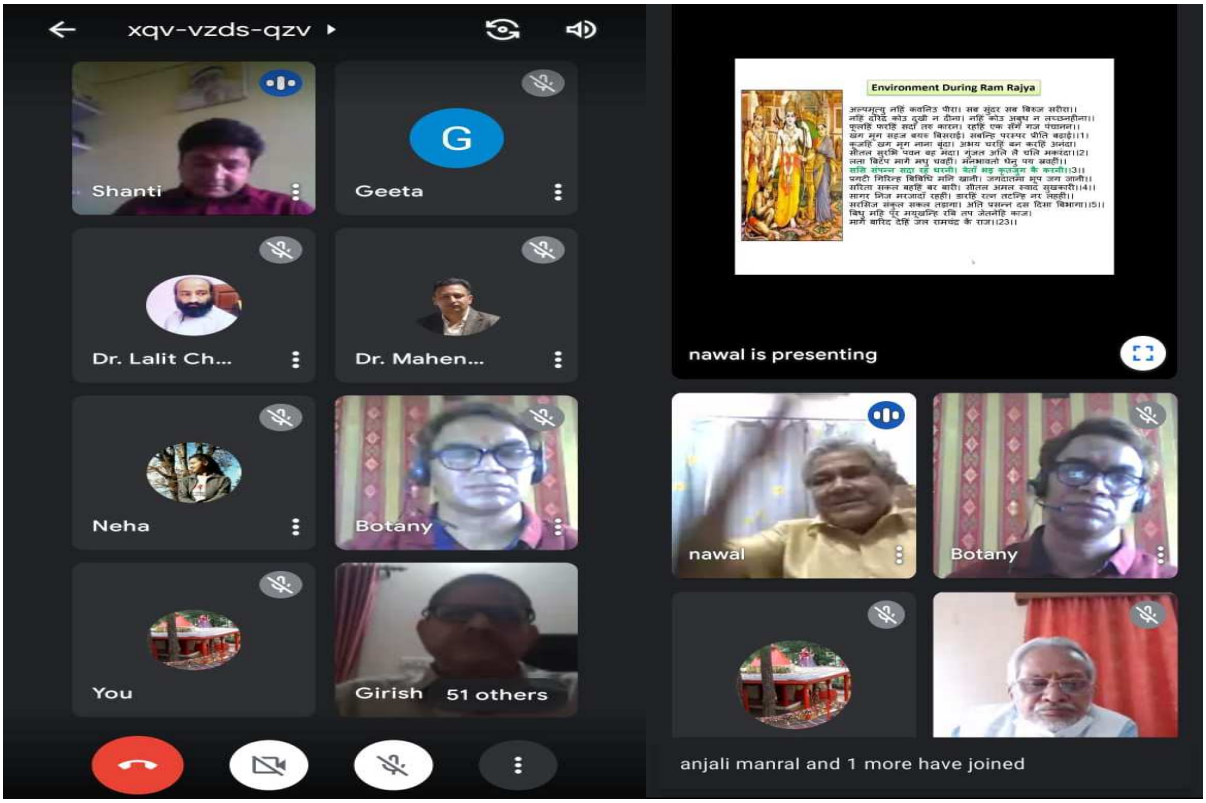

विशिष्ट अतिथि के तौर पर **उत्तरखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर औ0 पी0 एस0 नेगी** ने कहा कि हम अपनी प्रकृति के साथ मानवीय संबंध

स्थापित कर उसको बहाल कर सकते हैं। प्रकृति एवं मानव के सहयोग से हम प्रकृति को संरक्षित कर सकते हैं। कोरोनाकाल में हमें प्राकृतिक तत्वों की कीमत समझ आई है। उन्होंने कहा कि प्रकृति में निरंतर क्षरण हो रहा है। जो भयावह है। प्रकृति का ऐसे क्षरण होना ठीक नहीं है। पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक आपदाओं के प्रति हमें चिंतित होने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि महामारी के दौर में प्रकृति में भी सुधार देखने को मिला है। कोरोनाकाल के दौरान प्रदूषण कम हुआ है, जल की शुद्धता में सुधार देखने को मिला है। हमें अपनी धरती माता को बचाने के लिए आगे आना होगा।

इस अवसर पर वैज्ञानिक **डॉ0 डी0 के0 उप्रेती** ने कहा कि पर्यावरण में असंतुलन हो रहा है। धरती का तापमान निरंतर बढ़ रहा है। जिस कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं। वनस्पतियों के साथ–साथ मेडिसिनल प्लांट्स को भी नुकसान पहुंचा है। हमें जैव विविधता को बचाए रखने के लिए अलग–अलग क्षेत्रों में कार्य करना होगा। जन–समुदाय का सहयोग लेकर हम क्षेत्रीय स्तर पर वहां के अनुरूप औषधियों को उगाने के लिए काम कर सकते हैं।

प्रो0 एस0 डी0 तिवारी ने कहा कि ग्रामीण स्तर पर लोगों का सहयोग लेकर हम पर्यावरण को बचा सकते हैं। इसके लिए हमें तत्पर रहना होगा। इकोसिस्टम को बनाए रखने के लिए हमें वृक्षारोपण करने की आवश्यकता है। प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित प्रयोग करने की आवश्यकता है। हमें पौधों को लगाना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण की निरंतरता को बनाए रखने के लिए सहयोग करना होगा।

डॉ0 जी0 सी0 एस0 नेगी ने कहा कि प्रकृति का क्षरण होना चिंता की बात है। पर्यावरणविदों ने अपने शोधों में इस बात को कहा भी है। प्रकृति का क्षरण होने से हमारी वनस्पतियां और जैव विविधता खतरे में पड़ी है। हमें जैव विविधता खतरे में पड़ी है। हमें जैव विविधता को बनाए रखने के लिए और इस प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने के लिए कार्य करना होगा। हमें हिमालयी विकास के लिए पर्यावरण को ध्यान में रखना होगा। ऐसी योजनाएं बनाने की आवश्यकता है। जिससे प्रकृति एवं मानव के बीच संतुलन बरकरार रहे। हमें प्लानिंग करने की जरुरत है। हमें पौधारोपण, जल संवर्धन, औषधियों का रोपण करने और इनको बढावा देने के लिए कार्य करने की आवश्यकता है।

डॉ0 जी0 सी0 जोशी ने कहा कि मेडिसिनल प्लांट्स के प्रयोग से हम शरीर को बचा सकते हैं। गांव–घरों में इन औषधियों का आज भी प्रयोग होता है।

परम्परागत औषधि ज्ञान को वैज्ञानिक कसौटी पर परखकर उसका उपयोग करने की आवश्यकता है। परम्परागत औषधीय वनस्पतियों से संबंधित ज्ञान को संकंलित करने अपने शोध–पत्र में संकलित कर जनमानस तक ले जाएं। प्राचीन साहित्य में औषधीय तकनीक, औषधीय ज्ञान का अध्ययन करने, औषधी को समझने एवं जानने की जरुरत है।

वेबिनार के **संयोजक डॉ0 बलवंत कुमार** ने संचालन करते हुए कहा कि पर्यावरण की निरंतरता को बनाए रखने के लिए वनस्पतियों को संरक्षण करने की जरुरत है। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ नहीं कि जानी चाहिए। हमें अपने आस–पास जैव विविधता बनाए रखने की आवश्यकता है। उन्होंने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए वेबिनार की रूपरेखा रखी। इस अवसर पर **वनस्पति विज्ञान विभाग के शिक्षक डॉ0 धनी आर्या** ने कहा कि पर्यावरण चिंतन आज के समय क लिए बेहद जरूरी है। हमें वनस्पतियों के संरक्षण करने की आवश्यकता है। उन्होंने सभी अतिथियों का आभार जतायां

वेबिनार में डॉ0 धनी आर्या, डॉ0 मंजूलता उपाध्याय, डॉ0 सुभाष चंद्रा, डॉ0 ममता असवाल, डॉ0 महेन्द्र राणा, डॉ0 ललित जोशी, डॉ0 मनीष त्रिपाठी, डॉ0 के0 चंद्रशेखर, डॉ0 स्नेहलता, डॉ0 मनुहर आर्या, मनीष ममगई आदि देशभर के विद्वान और विद्यार्थी शामिल रहे।

'ग्लोबल एनवायरोनमेंटल इश्यूज एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट' विषय पर वन विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय वेबिनार का संचालनः

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के वन विज्ञान विभाग द्वारा **'ग्लोबल एनवायरोनमेंटल इश्यूज एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट'** विषय पर **विश्व पर्यावरण दिवस** के अवसर पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार के संबंध में वनस्पति विज्ञान विभाग की **डॉ0 मंजूलता उपाध्याय** ने विस्तार से रूपरेखा रखी।

वेबिनार के **संयोजक और वन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 अनिल कुमार यादव** ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें संवेदनशीलता के साथ चिंतन करना पड़ेगा। हमें जैव विविधता को बनाए रखने के लिए प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि आज जिस तरीके से पर्यावरण में निरंतर गिरावट आ रही है वो

चिंता की बात है। उससे जनमानस को कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। हमें वनारोपण का कार्य करना होगा।

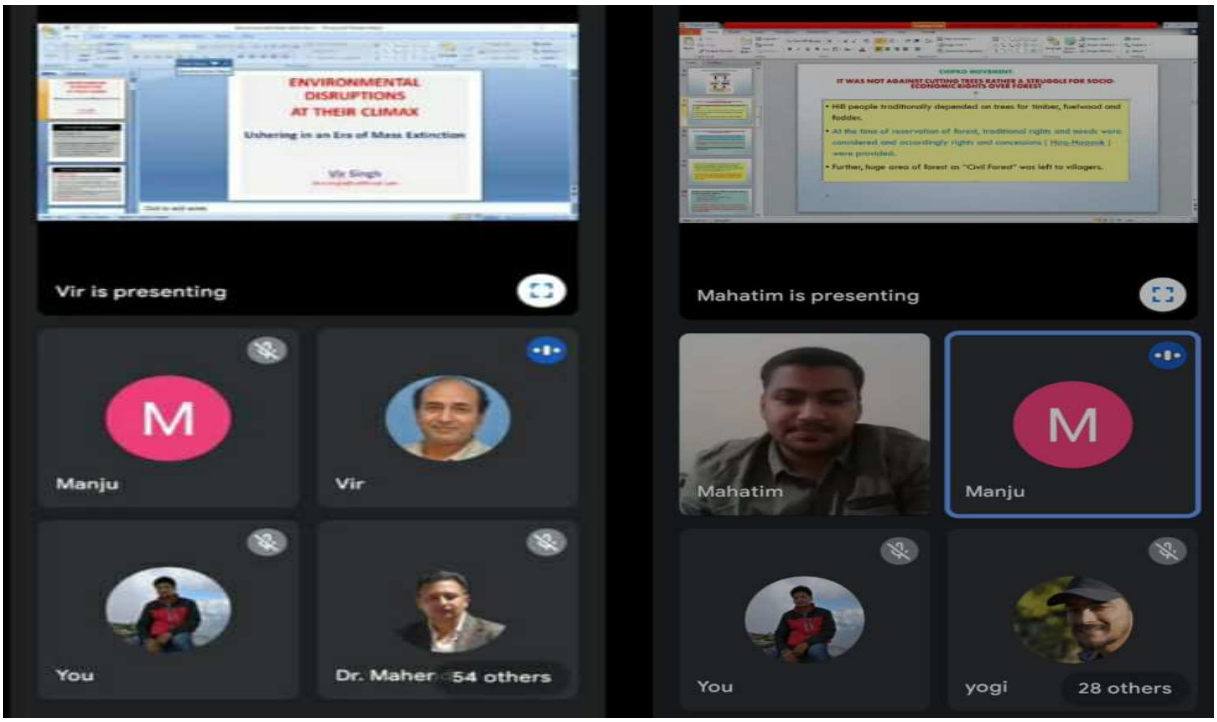

बीज वक्तत्व देते हुए टोरंटों से प्रोफेसर वीर सिंह (सेवानिवृत्त प्रोफेसर, एनवायरोनमेंटल साइंस, गोविंद बल्लभ पंत यूनिवर्सिटी एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, पंतनगर) ने विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन किया और उन्हें पर्यावरण के हो रहे क्षरण पर गंभीरता से बात रखी। उन्होंने ग्लोबलाईजेशन के कारणों और परिणाम को विस्तार से अपने व्याख्यान में स्पष्ट किया और कहा कि लगातार मानवीय हस्तक्षेप के कारण पर्यावरण असंतुलन हुआ है। आज मानवीय हस्तक्षेप के कारण खराब भूमि का क्षेत्रफल लगातार बढ़ रहा है। भूमि बंजर हो रही है। यह चिंता की बात है। उन्होंने बताया कि मोनोकल्चर के कारण, वन कटान होने, खोदने, भूमि की सिंचाई न हो पाने के कारण भूमिका को नुकसान पहुचा है। हमें पर्यावरण के संरक्षण के लिए जनमानस के साथ मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है।

बीज वक्तव्य देते हुए इंजीनि**यर महातिम यादव (आईएफएस एवं डी0 एफ0 ओ0, अल्मोड़ा)** ने कहा कि हमें पर्यावरण के लिए सचेत रहना होगा। जिस गति से जंगलों में आग लग रही है, उससे हमारे वन–वनस्पतियां भी नष्ट हो गई हैं। आग लगने से प्रकृति का चक्र टूट रहा है। अतिक्रमण के कारण हमारे पर्यावरण को खासा नुकसान पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि जिस चीड़ के जंगल को हम अक्सर किनारे कर देते हैं, वह उपयोगी वृक्ष है। उससे कई प्रकार की सामग्री हमको प्राप्त होती है। वह हमारी आर्थिकी को मजबूत कर रहा है। चीड़ के जंगलों से ही

ग्रामीणों को रोजगार मिलता है। हमें वन संरक्षण, पर्यावरण के संरक्षण के लिए जनता की सहभागिता आवश्यक रूप से करनी होगी। उन्होंने कहा कि जंगली जानवरों का निरंतर आतंक बना हुआ है। यह डिफॉरैस्टेशन के कारण हुआ है। इसके कारण अब आपदा की घटनाओं में बढ़ोत्तरी हो रही है। वनों के कटाव आदि से अतिवृष्टि हो रही है। जंगल जलने से जंगली जानवर भीड़ क्षेत्र में आ धमक रहे हैं। तेंदुए के हमले निरंतर बढ रहे हैं। हमें जंगल उगाकर जंगली जानवरों को भीड़भाड़ में आने से रोक सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमें जंगल बचाने होंगे। उन्होंने बेबिनार में विद्यार्थियों को इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में आने हेतु भी प्रेरित किया। उनके साथ उन्होंने विस्तार से बातचीत की।

बीज वक्ता के रूप में **डॉ0 वी0 आर0 एस0 रावत** (पूर्व ए0 डी0 जी0, क्लाइमेट चेंज, आईसीएफआरई, देहरादून) ने पर्यावरण को बचाने के लिए संदेश दिया। उन्होंने वेबिनार के आयोजकों और विश्वविद्यालय को अपनी शुभकामनाएं दी।

मुख्य अतिथि के रूप में **प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी (कुलपति, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा)** ने कहा कि हमें पर्यावरण को संवेदनशील के साथ देखना होगा। हमें बंजर हो रहे क्षेत्रों में वृक्षारोपण कर जंगलों को विकसित करना होगा। हमें विलुप्त हो रही वनस्पतियों को बचाना होगा। हमें प्रकृति के साथ आत्मीय व्यवहार के साथ संतुलन बनाना होगा। अब पर्यावरण के संरक्षण के लिए वनों का संरक्षण किया जाना बहुत जरुरी है। उन्होंने वेबिनार हेतु आयोजकों और आंमंत्रित सभी वक्ताओं को अपनी शुभकामनाएं दी। डॉ0 मंजूलता उपाध्याय ने संचालन एवं आभार व्यक्त किया।

वेबिनार में वन विज्ञान विभाग के प्रवक्ता डॉ0 मनमोहन सिंह कनवाल, डॉ0 महेंद्र राणा, डॉ0 ललित चंद्र जोशी (पत्रकारिता एवं जनसंचार), डॉ0 उमंग सैनी (आई0टी0) आदि सहित सैकड़ों शिक्षक, छात्र–छात्रा शामिल हुए।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर योग विज्ञान विभाग द्वारा 21वीं सदी की पर्यावरणीय चुनौतियां' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन:

योग विज्ञान विभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार में '21वीं सदी की पर्यावरणीय चुनौतियां' विषय

पर गंभीर चिंतन हुआ। योग विज्ञान विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर **'21वीं सदी की पर्यावरणीय चुनौतियां'** विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के तौर पर प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी, कुलपति सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, बेबिनार के मुख्य वक्ता प्रो0 बी0 डी0 जोशी (विख्यात पर्यावरणविद् अवकाश प्राप्त प्राध्यापक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार) एवं योग विभागाध्यक्ष डॉ0 नवीन भट्ट ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ शुभारंभ किया। शोध छात्रा मोनिका बंसल ने अतिथियों का परिचय कराते हुए स्वागत किया। इस अवसर पर योग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 नवीन भट्ट ने योग विभाग द्वारा आयोजित वेबिनार की रूपरेखा प्रस्तुत की।

मुख्य अतिथि प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी ने कहा कि '21वीं सदी में पर्यावरण के प्रति हमें ज्यादा जागरुक होने की आवश्यक्ता है।' यद्यपि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस हेतु अनेकों योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है तथापि आप प्रत्येक व्यक्ति की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वह पर्यावरण के प्रति सचेत एवं भविष्योन्मुखी रहें और भविष्य में आने वाली पीढियों को विरासत में रूप में एक अच्छा पर्यावरण दें। शैक्षिक एवं सामाजिक संस्थाएं इस हेतु अधिक सक्रियता से कार्य करें। **मुख्य वक्ता प्रो0 बी0 डी0 जोशी** ने वर्तमान परिस्थितियों का वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण किया और भविष्य हेतु आधुनिक विज्ञान को प्राचीनतम वैदिक विज्ञान के साथ समायोजन कर एक नई सोच विकसित करते हुए पर्यावरण

संरक्षण की बात कही। इस अवसर पर शोधार्थी विश्वजीत वर्मा द्वारा अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया और कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी रजनीश जोशी ने किया। इस अवसर पर योग विज्ञान विभाग के शिक्षक श्री लल्लन कुमार, गिरीश अधिकारी, चन्दन लटवाल, शिक्षा संकाय के डॉ0 भाष्कर चौधरी, कुमाऊँ विश्वविद्यालय के क्रीडाधिकारी डॉ0 नागेंद्र शर्मा, डॉ0 हेम चंद्र पाण्डे आदि सहित सैकड़ों प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

मीत पीपल अभियानः

दिनांकः 18 मई, 2021 को **सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के माननीय कुलपति प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी और श्रीमती संजना भंडारी** ने कुलपति आवास के पास से 'मीत पीपल अभियान' की शुरुआत की है। उत्तराखंड एक चेतना से भरा हुआ राज्य है। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय चेतना को लेकर यहां के आंदोलन, अभियान, मुहिम और जनजागरुकता के प्रयास देश का ध्यान सदा आकर्षित करते रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण को लेकर मीत पीपल अभियान की माननीय कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र सिंह भंडारी एवं श्रीमती संजना भंडारी ने शुरूआत की है। यह अभियान इस अल्मोड़ा से प्रारम्भ हुआ है। अल्मोड़ा का एक अपना इतिहास रहा है। राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक चेतना और पर्यावरणीय चेतना उत्पन्न करने के लिए अल्मोड़ा नगरी का योगदान काफी है। आज भी इन्हीं परम्पराओं का निर्वहन हो रहा है। इसी के साथ पर्यावरण बचाने के लिए 'मीत पीपल अभियान' भी शुरु हो गया है।

मीत पीपल अभियान की शुरुआत करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति जी

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय और शिक्षा संकाय के संयुक्त तत्वावधान में 1 से 5 जून तक पौधारोपण अभियान का संचालनः

कोरोना संक्रमण के प्रति समाज को जागरुक करने में सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संकाय द्वारा संयुक्त रूप से पीपल के वृक्षों को रोपकर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी और श्रीमती संजना भंडारी के अभियान को आगे बढ़ाते हुए 26 पीपल वृक्षों का रोपण किया गया है। पीपल के पौधों को रोपने के लिए बी0एड0 एवं एम0एड0 के विद्यार्थियों ने 1 जून से 5 जून तक वृहद पौधारोापण अभियान चलाकर कोरोनाकाल में पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है। शिक्षा संकाय द्वारा ग्राम क्षेत्रों में अलग–अलग स्थानों पर 100 पीपल वृक्षों को रोपने का लक्ष्य रखा है।

'मीत पीपल अभियान' के तहत पीपल पौध रोपते हुए शिक्षा संकाय की छात्राएं

शिक्षा संकाय की संकायाध्यक्ष प्रो0 विजया रानी ढौंडियाल के संयोजन में पीपल के वृक्षों को रोपकर माननीय कुलपति जी के प्रयासों और उनके पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर भी पौधारोपण की उपादेयता की अलख जगाकर, समाज के प्रत्येक वर्ग को इससे जोड़ने की अपील की गई। व्हाट्सएप, फेसबुक और यू–ट्यूब पटल पर भी पर्यावरण के संरक्षण से संबंधित प्रेरक वीडियो प्रसारित कर लोगों को सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के अभियान से जोड़ रहे हैं

पौधारोपण करते हुए शिक्षा संकाय के विद्यार्थी

पौधारोपण अभियान में शिक्षा संकाय के प्राध्यापकों, शोधार्थियों व प्रशिक्षुओं ने अपने–अपने घरों, मंदिरों, विद्यालयों के समीप आदि क्षेत्रों में एक पीपल पौध रोपकर 'मीत पीपल अभियान' को आगे बढ़ाया। 1 से 5 जून तक पीपल के साथ–साथ चौड़ीपत्ती के पौधों का रोपण कर उनकी देखभाल करने का संकल्प भी लिया। शिक्षा संकाय के विद्यार्थियों द्वारा वृक्षारोपण करते हुए आम, अमरूद, बांज, बुरांश, उतीस आदि विभिन्न प्रजातियों के पौधों का रोपण किया गया है। पौधारोपण अभियान में प्रो0 भीमा मनराल, डॉ0 संगीता पवार, डॉ0 नीलम कुमारी, अंकिता कश्यप, गौहर फातिमा आदि ने सहयोग किया।

'राष्ट्रीय सेवा योजना' ने (1 जून से 7 जून) तक पर्यावरण सप्ताह मनाया:

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 1 जून से 7 जून तक **'पर्यावरण सप्ताह'** मनाया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 ममता असवाल के निर्देशन में स्वयंसेवियों ने अपने अपने ग्राम क्षेत्रों, जैसे–नैनोली, झिरणखेत, मनीला,

भिकियासैंण, सल्ट, दुगालखोला, चीनाखान, पुरियाचौड़ा, भगतोला, गरुड़, जाजर आदि में पीपल एवं अन्य चौड़ी पत्ती के पौधों का रोपण किया गया।

पौंधारोपण करते हुए एनएसएस की छात्राएं

विश्व पर्यावरण दिवस–5 जून के अवसर पर सोबन सिंह जीना परिसर में भी पर्यावरण सप्ताह के तहत पौधारोपण किया गया। स्वयंसेवियों द्वारा अपने गृहक्षेत्रों में लोगों को सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के कुलपति प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी एवं श्रीमती संजना भंडारी द्वारा शुरु किए गए **'मीत पीपल'** अभियान से जोड़ने हेतु जागरुक किया।

पौंधारोपण करते हुए एन0 एस0 एस0 के विद्यार्थी

स्वयंसेवियों द्वारा अपने परिवार के सदस्यों को भी आने वाले समय में 'पीपल' के ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने हेतु प्रेरित किया। स्वयंसेवियों ने बताया कि पीपल के वृक्ष से प्राणवायु मिलती है। यह हमारे धर्म–संस्कृति से भी जुड़ा हुआ वृक्ष है। भारतीय संस्कृति में इस वृक्ष की पूजा करने का भी जिक्र आता है। इसलिए इस वृक्ष को मंदिर क्षेत्र, ग्रामों आदि स्थानों पर रोप कर पर्यावरण को बचाने के लिए जागरुक किया गया।

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय में नेशनल कैंपेन ऑन 2020 के तहत औषधीय पौधों का रोपण किया गया:

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बहुपयोगी औषधीय पौधों से संबंधित नेशनल कैंपेन ऑन 2020, मेडिसिनल प्लांट्स फॉर 2020 के तहत एक प्रोजेक्ट की शुरुआत हुई। इस प्रोजेक्ट के तहत सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय में औषधीय पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम में **प्रो0 नरेंद्र सिंह भंडारी**, कुलपति, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में इस प्रोजेक्ट का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों को हम किचेन गार्डन में भी उगा सकते हैं। इन प्लांट्स से हमारी इम्युनिटी बेहतर होती है। हमारे ग्रामीण समाज में आज भी चोट आदि लगने पर परम्परागत औषधीय पौधों का प्रयोग कर, उपचार करते हैं। हमारे इस उत्तराखंड में औषधीय पौधों और जनमानस में व्याप्त औषधीय ज्ञान का संकलन करने की आवश्यकता है।

औषधीय पौधों का रोपण करते हुए विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति जी एवं कुलसचिव

प्रोजेक्ट के संयोजक और सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ0 बिपिन चंद्र जोशी ने प्रोजेक्ट के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों के विशेष औषधीय गुणों के कारण इनका महत्व लोगों के स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत है। औषधीय पौधों का प्रयोग भोजन, स्वाद, दवा या सुगंध के लिए किया जाता रहा है। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा देशभर में औषधीय पौधों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक प्रोजेक्ट 2020 में प्रारंभ किया गया है। जिसमें 20 औषधीय पौधों को हर घर में उगाने का लक्ष्य रखा गया है।

औषधीय पौधों में स्वरोजगार सृजन भी किया जा सकता है। यदि हम तुलसी की बात करें तो तुलसी का तेल बाजारों में 800 से 1000 रु0 प्रति किलो तक बिकता है। जबकि इसका बीज भी काफी महंगा बिक जाता है। 3 महीने में ही तुलसी तैयार हो जाती है। कोरोना के समय प्रवासी लोग अपने अपने गांव लौटे हैं। यदि वे अपनी बंजर पड़ी खेतों में तुलसी की खेती करें तो 3 महीने में ही 1 से 2 लाख तक आय अर्जित कर सकते हैं। तुलसी के पौधों को अप्रैल–मई में लगाया जाता है और इसमें आसानी से कोई रोक भी नहीं लगाता। श्री जोशी ने बताया कि आज औषधीय पौधों के महत्व को घर–घर तक पहुंचाने की आवश्यकता है। इस अभियान के तहत 20 औषधीय पौंधे, जिनमें घृतकुमारी, ब्राह्मी, मंडोकपमी, लेमन ग्रास, अदुआ/वासा, लाजवंती, करी पत्ता, आंवला, गिलोई, अश्वगंधा, शतावर, पुनर्नवा, हटजोड़ी, गुढल, मेहंदी साहजान, तुलसी पत्ता, अजवाइन, निर्गुंडी और अदरक को लगाने के लिए जनता को जागरुक किया जाएगा।

शिक्षकों को औषधीय पौध वितरित करते हुए अतिथि

औषधीय पौधों को लेकर आयोजित हुई इस गोष्ठी में औषधीय पौधों का रोपण किया गया तथा शिक्षकों को पौंधे वितरित किए गये। इस अवसर पर डॉ0 नवीन भट्ट (योग विज्ञान विभाग), डॉ0 नंदन बिष्ट (भौतिकी विज्ञान विभाग), नमामि गंगे की विश्वविद्यालय संयोजक डॉ0 ममता असवाल (शिक्षा संकाय), सहायक, परीक्षा नियंत्रक डॉ0 भाष्कर चौधरी (शिक्षा संकाय), डॉ0 मुकेश सामंत (जंतु विज्ञान विभाग), कूर्मांचल छात्रावास के अधीक्षक डॉ0 देवेद्र धामी (रसायन विज्ञान विभाग), डॉ0 ललित चंद्र जोशी (पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग) सहित विश्वविद्यालय के शिक्षणेत्तर कर्मियों में ललित पोखरिया, गोविंद मेर, मोहन सिंह, दिनेश पटेल, गौरव उप्रेती, विजयानंद जोशी, अंकित जोशी, अतुल कुमार यादव, गौरव उप्रेती आदि शामिल हुए।